सूरह — एक कहानी

सूरह अन-नबा

बड़ी ख़बर

पूरा सफ़र — वो ख़बर जिस पर वो बहस करते हैं —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 78 • 40 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

'अम्म यतसा-अलून
1. वो एक दूसरे से किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं?

'अनिन्-नबाइल्-'अज़ीम
2. उस बड़ी ख़बर के बारे में।

व ज'अल्ना नौमकुम सुबाता
9. और हमने तुम्हारी नींद को आराम बनाया।

इन्न यौमल्-फ़स्लि कान मीक़ाता
17. बेशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है।

इन्न लिल्-मुत्तक़ीन मफ़ाज़ा
31. बेशक परहेज़गारों के लिए कामयाबी की जगह है।

यौम यन्ज़ुरुल्-मर्उ मा क़द्दमत यदाह
40. जिस दिन आदमी देखेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा।

फ़िज़ाओं में घूमता सवाल

बेटा, यह सूरह एक बड़े अनोखे अंदाज़ में शुरू होती है — किसी हुक्म या कहानी से नहीं, बल्कि लोगों को गुफ़्तगू के बीचो-बीच पकड़ कर: "अम्म यतसा-अलून — वो एक दूसरे से किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं?'

उन दिनों के मक्का का तसव्वुर कीजिए। क़ुरआन आ चुका था, और शहर उस के बारे में बात करना बंद ही नहीं कर पा रहा था। बाज़ारों में, का'बा के गिर्द, शाम की महफ़िलों में — हर जगह लोग एक दूसरे से पूछ रहे थे: ये है क्या? ये आदमी एक ऐसे दिन की बात क्या कर रहा है जब मुर्दे उठेंगे?

और अल्लाह, सातों आसमानों के ऊपर से, पूरे शहर की ये गुफ़्तगू सुनते हैं — और तक़रीबन एक शान के साथ पूछते हैं: 'वो किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं?'

फिर वो अपने ही सवाल का जवाब देते हैं: "अनिन्-नबाइल्-'अज़ीम — उस बड़ी ख़बर

के बारे में — अल्लज़ी हुम फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून — जिस में वो इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।'

बेटा, ग़ौर कीजिए इसे कैसे बयान किया गया। अरबी में 'नबा" कोई आम ख़बर नहीं; ये अहम ख़बर है, ऐसी जो चीज़ें बदल देती है। और ये 'अज़ीम है — बड़ी। और फिर: वो 'मुख़्तलिफ़ून' हैं — इख़्तिलाफ़ में — क्योंकि अल्लाह का सच एक है, और ये सिर्फ़ इंसानी राएँ हैं जो उसके बारे में सौ टुकड़ों में बिखर जाती हैं।

और फिर वज़न के लिए दोहराई गई तंबीह: 'कल्ला सया'लमून। सुम्म कल्ला सया'लमून — हरगिज़ नहीं! वो जान लेंगे। फिर, हरगिज़ नहीं! वो जान लेंगे।' बेटा, उस पुर-सुकून यक़ीन को महसूस कीजिए। अल्लाह यहाँ उन से बहस नहीं करते। वो बस इतना कहते हैं: तुम्हें पता चल जाएगा।

तुम्हारी रोज़मर्रा ज़िंदगी में बारह निशानियाँ

और अब सूरह एक शानदार काम करती है। उस दिन को फ़ौरन बयान करने के बजाय, अल्लाह वो चीज़ें गिनवाते हैं जो हम हर रोज़ देखते हैं — और हर एक ख़ामोशी से एक दलील है कि बड़ी ख़बर सची है।

'अ लम नज्'अलिल्-अर्ज़ मिहादा — क्या हमने ज़मीन को मिहाद नहीं बनाया?' मिहाद, बेटा, एक गहवारा है, एक तैयार बिछौना। ज़मीन बस एक चट्टान नहीं जिसपर हम रहते हैं — ये एक बिस्तर है, ठीक दुरुस्त दर्जा-ए-हरारत, हवा, पानी और खाने के साथ एक ऐसी नाज़ुक मख़लूक़ के लिए तैयार किया गया जिसे रात के आठ घंटे बे-होश लेट जाना ज़रूरी है।

'वल्-जिबाल औताद — और पहाड़ों को मेख़ें?' औताद वो मेख़ें हैं जो तंबू को थामे रखती हैं। बेटा, जो पहाड़ आप देखते हैं वो सिर्फ़ नज़र आने वाला हिस्सा है; उनकी जड़ें ज़मीन की तह में गहरी उतरी हुई हैं।

'व ख़लक़्नाकुम अज़्वाजा — और हमने तुम्हें जोड़ों में बनाया।'

'व ज'अल्ना नौमकुम सुबाता — और हमने तुम्हारी नींद को आराम बनाया।' बेटा, इसके साथ बैठिए, क्योंकि हम इसे हर रात मामूली समझ लेते हैं। दिन में एक बार,

आपका जिस्म ख़ुद को बंद कर लेता है। आप बे-बस लेट जाते हैं — आप अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते — और आपके अंदर कुछ मरम्मत हो जाता है, तरतीब पा जाता है। और हर सुबह आपकी रूह आपको कौन लौटा देता है? इसी लिए नबी ﷺ ने हमें जागने पर कहना सिखाया: 'अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी अह्याना ब'अद मा अमातना।' नींद, बेटा, मौत की एक रिहर्सल है — और जागना दोबारा ज़िंदा होने की रिहर्सल, जो हर सुबह आपके लिए की जाती है।

'व ज'अल्नल्-लैल लिबासा — और हमने रात को लिबास बनाया।' एक लिबास, बेटा — ये आपको ढाँप लेता है, चुपा लेता है, आपको तन्हाई देता है।

'व ज'अल्नन्-नहार म'आशा — और हमने दिन को रोज़ी कमाने का वक़्त बनाया।' काम के लिए रौशनी, आराम के लिए अँधेरा — एक ऐसा निज़ाम जिसे किसी इंसान ने डिज़ाइन नहीं किया।

'व बनैना फ़ौक़कुम सब'अन शिदादा — और हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आसमान) बनाए — व ज'अल्ना सिराजंव्-वह्हाजा — और एक दमकता चिराग़ बनाया।'

'व अन्ज़ल्ना मिनल्-मु'सिराति मा-अन सज्जाजा — और हमने बादलों से मूसलाधार पानी उतारा — लि-नुख़्रिज बिही हब्बंव्-व नबाता — ताकि उससे अनाज और सब्ज़ा निकालें — व जन्नातिन अल्फ़ाफ़ा — और घने, गुत्थे हुए बाग़।'

बेटा, देखिए अल्लाह ने अभी क्या किया। किसी ने कहा: 'मुर्दे कैसे उठाए जाएँगे?' और अल्लाह ने जवाब एक बिस्तर, एक तंबू की मेख़, एक रात की नींद, एक तुलू-ए-आफ़ताब, और मुर्दा मिट्टी पर बरसती बारिश की तरफ़ इशारा कर के दिया जो बाग़ों में फूट पड़ती है। उनकी दलील किसी लैबोरेटरी में नहीं, बेटा — ये आपके बेडरूम में है, आपकी प्लेट पर है, और हर बरसात में आपकी खिड़की के बाहर।

एक मुक़र्रर वक़्त

फिर, दलील रख देने के बाद, सूरह फ़ैसला सुनाती है: 'इन्न यौमल्-फ़स्लि कान

मीक़ाता — बेशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है।'

बेटा, 'मीक़ात' का मतलब है एक मुक़र्रर मुलाक़ात — उस मीक़ात की तरह जहाँ हाजी को एहराम बाँधना ज़रूरी होता है; एक ऐसी जगह और वक़्त जिसमें भाव-ताव मुमकिन नहीं। वो दिन मुस्तक़बिल में तैरता हुआ कोई इमकान नहीं है; ये वुजूद की डायरी में पहले से दर्ज एक मुलाक़ात है, और हम में से हर एक उसकी बुकिंग में शामिल है।

'यौम युन्फ़ख़ु फ़िस्-सूरि फ़-त'तून अफ़्वाजा — जिस दिन सूर फूँका जाएगा और तुम गिरोह दर गिरोह आओगे।'

'व फ़ुतिहतिस्-समा-उ फ़-कानत अब्वाबा — और आसमान खोल दिया जाएगा और दरवाज़े दरवाज़े बन जाएगा — व सुय्यिरतिल्-जिबालु फ़-कानत सराबा — और पहाड़ चलाए जाएँगे और सराब बन जाएँगे।' बेटा, क्या मंज़र है: पहाड़ — मज़बूती की मिसाल — झिलमिलाती हवा बन कर रह जाएँगे। हर वो चीज़ जिसे हम दाइमी कहते थे, अपने असली वज़न पर ज़ाहिर हो जाएगी।

फिर जहन्नम का बयान: 'इन्न जहन्नम कानत मिरसादा — बेशक जहन्नम घात में है — लित्-ताग़ीन म'आबा — सरकशों के लिए एक ठिकाना।' 'ला यज़ूक़ून फ़ीहा बर्दंव्-व ला शराबा — उसमें वो न ठंडक चखेंगे न पीने की चीज़ — इल्ला हमीमंव्-व ग़स्साक़ा — सिवाए खौलते पानी और गंदे पीप के — जज़ा-अंव्-विफ़ाक़ा — एक ठीक मुताबिक़ बदला।'

बेटा, ये जुमला — 'जज़ा-अन विफ़ाक़ा' — अहम है। वहाँ कोई चीज़ बे-वजह या हद से ज़्यादा नहीं; वो ठीक उस के बराबर है जो कमाया गया। और क्यों? 'इन्नहुम कानू ला यर्जून हिसाबा — बेशक वो हिसाब की तवक़्क़ो नहीं रखते थे। व कुल्ल शै-इन अह्सैनाहु किताबा — और हर चीज़ हमने एक किताब में गिन रखी है।'

बेटा, ये आख़िरी आयत आपका पूरा दिन दोबारा तरतीब दे देनी चाहिए: हर चीज़ — हर लफ़्ज़, हर नज़र, हर पोशीदा नेकी, हर पोशीदा गुनाह — गिनी हुई, लिखी हुई, फ़ाइल की हुई। कुछ भी उड़ कर ग़ायब नहीं होता।

कामयाबी की जगह

और फिर सूरह पलटती है, और ज़ुबान उसके साथ पलट जाती है: 'इन्न लिल्-मुत्तक़ीन मफ़ाज़ा — बेशक परहेज़गारों के लिए मफ़ाज़ है — कामयाबी, नजात, और मुराद पाने की जगह।'

बेटा, 'मफ़ाज़' एक साथ दोनों माने रखता है: जिस से आप डरते थे उस से बच जाना, और जिस की उम्मीद थी वो पा लेना। यही असल कामयाबी की तारीफ़ है — और ग़ौर कीजिए कि अल्लाह ये लफ़्ज़ मुत्तक़ीन के लिए रखते हैं, अमीरों या मशहूर लोगों के लिए नहीं।

'हदाइक़ व अ'नाबा — बाग़ और अंगूर — व कवा'इब अत्राबा — और हम-उम्र साथी — व क'सन दिहाक़ा — और भरा हुआ प्याला।' 'ला यस्म'ऊन फ़ीहा लग़्वंव्-व ला किज़्ज़ाबा — वो उसमें न फ़ुज़ूल बात सुनेंगे न झूट।'

बेटा, इस पर रुक जाइए। उन सारी लज़्ज़तों में से जो गिनवाई गईं — बाग़, फल, साथी, मशरूब — अल्लाह एक ऐसी चीज़ को नुमायाँ करते हैं जिसे हम शाज़ ही क़द्र की नज़र से देखते हैं: एक ऐसी जगह जहाँ न बेकार बकवास हो न झूट। सोचिए इस दुनिया में हमारी कितनी थकन ठीक इन्हीं दो चीज़ों से आती है: बे-मक़सद बात और बे-ईमानी। एक ऐसी पूरी हमेशगी का तसव्वुर कीजिए जहाँ आपसे बोली गई हर बात सची और सुनने के लायक़ हो।

'जज़ा-अम्-मिर्-रब्बिक 'अता-अन हिसाबा — आपके रब की तरफ़ से एक बदला, एक तोहफ़ा, ख़ूब हिसाब किया हुआ।' बेटा, तवाज़ुन देखिए: ये 'जज़ा" है — एक कमाया हुआ अज्र — और साथ ही "अता" — एक तोहफ़ा, ख़ुद से दिया गया।

वो दिन जब कोई बग़ैर इजाज़त नहीं बोलेगा

फिर सूरह उस जमावे की अज़मत बयान करने के लिए बुलंद होती है: 'रब्बिस्-समावाति वल्-अर्ज़ि व मा बैनहुमर्-रह्मान — आसमानों और ज़मीन का और जो उनके दरमियान है उस का रब, अर-रहमान — ला यम्लिकून मिन्हु ख़िताबा — वो उस

से बात करने का इख़्तियार नहीं रखते।'

'यौम यक़ूमुर्-रूहु वल्-मलाइकतु सफ़्फ़ा — जिस दिन रूह (जिब्रील) और फ़रिश्ते सफ़ बाँध कर खड़े होंगे — ला यतकल्लमून इल्ला मन अज़िन लहुर्-रह्मानु व क़ाल सवाबा — वो नहीं बोलेंगे सिवाए उस के जिसे अर-रहमान इजाज़त दें, और जो ठीक बात कहे।'

बेटा, इस मंज़र को जज़्ब कीजिए। मख़लूक़ के सबसे अज़ीम फ़रिश्ते, सफ़ों में खड़े — ख़ामोश। एक हर्फ़ भी बग़ैर इजाज़त नहीं। इस दुनिया में हर एक दूसरे पर छा कर बोलता है; उस दिन, ख़ुद जिब्रील भी इजाज़त के मुंतज़िर हैं। और ग़ौर कीजिए यहाँ दो बार इस्तेमाल हुआ नाम: अर-रहमान। इस होला देने वाले सन्नाटे के बीच, वो अपने आप को सबसे ज़्यादा रहीम कह कर नाम दे रहे हैं।

'ज़ालिकल्-यौमुल्-हक़्क़ — वो सच का दिन है — फ़-मन शा-अत्तख़ज़ इला रब्बिही म'आबा — तो जो चाहे, अपने रब की तरफ़ लौटने का रास्ता बना ले।'

बेटा, 'म'आब' — लौटने की जगह, घर वापसी। दरवाज़ा इस सारी तंबीह के बीचो-बीच अभी खुला बयान किया गया: जो चाहे, लौट आए।

काश मैं मिट्टी होता

और अब आख़िरी आयत, बेटा — क़ुरआन के सबसे दिल में उतर जाने वाले इख़्तिताम में से एक: 'इन्ना अन्ज़र्नाकुम 'अज़ाबन क़रीबा — बेशक हमने तुम्हें एक क़रीब अज़ाब से डरा दिया — यौम यन्ज़ुरुल्-मर्उ मा क़द्दमत यदाह — जिस दिन आदमी देखेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा — व यक़ूलुल्-काफ़िरु या लैतनी कुन्तु तुराबा — और मुनकिर कहेगा: काश मैं मिट्टी होता!'

बेटा, सोचिए इस आरज़ू का मतलब क्या है। यहाँ एक इंसान है — वो मख़लूक़ जिसे अल्लाह ने सारी मख़लूक़ात पर शरफ़ बख़्शा, अक़्ल, गुफ़्तगू, इख़्तियार, एक रूह दी — और उस दिन, अपने ही नामे को देख कर, वो आरज़ू करता है कि काश वो मिट्टी होता। लोगों के पाँव तले की मिट्टी। कुछ भी नहीं। न शुऊर, न जवाब-देही, न याद।

बेटा, इंसान होने का शरफ़ — जिसे हम अपनी ज़िंदगी भर लुत्फ़ ले कर गुज़ारते हैं — उस शख़्स के लिए ना-क़ाबिल-ए-बर्दाश्त हो जाएगा जिसने उसे ज़ाया कर दिया।

और सूरह की बनावट देखिए: इसकी इब्तिदा उन लोगों से हुई जो बड़ी ख़बर पर बहस कर रहे थे — बात करते, झगड़ते, मज़ाक़ उड़ाते — और इसका इख़्तिताम उन्हीं में से एक शख़्स के अपने हाथों को देखने और ये आरज़ू करने पर होता है कि काश वो कभी वुजूद में ही न आया होता। इतनी सारी गुफ़्तगू, और जवाब तो शुरू से ही उसके अपने अमल में लिखा हुआ था।

'जिस दिन आदमी देखेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा' — बेटा, यही वो वाहिद सवाल है जो ये सूरह असल में पूछ रही है। 'आप उस दिन के बारे में क्या सोचते हैं?' नहीं, बल्कि 'आपके हाथों ने उसके लिए क्या आगे भेजा?' आज हम जो भी भेज रहे हैं — एक नमाज़, एक झूट, एक नेकी, एक धोका — वो पैक हो कर हमसे आगे रवाना किया जा रहा है, और एक दिन हम खड़े हो कर उस डिलीवरी को देखेंगे।

इस सूरह से क्या सीखा

1. सच एक है; सिर्फ़ राएँ बिखरती हैं — और बड़ी ख़बर पर अल्लाह का जवाब पुर-सुकून है: 'वो जान लेंगे।'

2. रोज़मर्रा निशानियों को दलील की तरह पढ़िए: गहवारा-ज़मीन, पहाड़-मेख़ें, रात का लिबास, दमकता चिराग़, मुर्दा मिट्टी को ज़िंदा करती बारिश।

3. नींद हर रात मौत की रिहर्सल है और जागना हर रोज़ दोबारा ज़िंदा होने की — हर सुबह उनका शुक्र कीजिए।

4. वो दिन एक 'मीक़ात' है — पहले से दर्ज मुलाक़ात, जिसमें भाव-ताव मुमकिन नहीं।

5. हर चीज़ किताब में गिनी हुई है — कुछ भी उड़ कर ग़ायब नहीं होता।

6. जन्नत की एक नेमत का नाम ख़ास लिया गया: न फ़ुज़ूल बात, न झूट — इसी की क़द्र अभी से सीखिए।

7. वाहिद सवाल यही है: आपके हाथों ने क्या आगे भेजा? आज जो भेजा जा रहा है, वो एक दिन आपके सामने रखा जाएगा।

या अल्लाह, हमारे हाथों से वो भेजवाइए जो उस दिन हमें ख़ुश कर दे, और हमें उन में रखिए जिन के लिए मफ़ाज़ है। आमीन।